विचार बिन्दु

घृणा और प्रेम दोनों अंधे होते हैं। –कहावत

ज्ञान...समझ...युक्ति!

ज्ञान, समझ और युक्ति जीवन के सभी पहलुओं से जुड़े तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। ज्ञान वस्तुत: आंकड़ों से आंकड़ों, या आंकड़ों से सूचना या सूचना से सूचना के संयोग का ऐसा संठाह है जिसका सन्देश स्पष्ट होता है। ज्ञान के कम से कम तीन प्रकार हैं: शोध आधारित-ज्ञान, अनुभवजन्य-ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान। कार्य-संपादन में इन तीनों का महत्वपूर्ण योगदान है। अच्छा नेतृत्व नवीन ज्ञान को जीवन भर सीखता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं:-

थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति, जिसकी बात हम आगे करेंगे, को मॉडलिंग के समकक्ष माना जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है। नवाचार और रचनात्मकता में ज्ञान एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रभावी संचार के लिए ज्ञान भी आवश्यक है। जिन लोगों को किसी विषय की गहरी समझ होती है, वे आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं, और समस्याओं के हल करा सकते हैं। पर ज्ञान से आगे की यात्रा और भी महत्वपूर्ण है। किसी कार्य को सम्पादित करते समय ज्ञान का उपयोग करने से अनुभव प्राप्त होता है। जीवन के विविध क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते हैं, जिससे ज्ञान से आगे हमारी समझ या विजडम बढ़ती रहती है। विजडम को भारतीय दर्शन में बुद्धिमत्ता, मनीषा, मतिमानता, प्रज्ञा, प्रज्ञता, बुद्धिमानी, ज्ञान, ज्ञान-परिपूर्णता, ज्ञानज्ञता-कर्मज्ञता, समझ आदि कहा जाता है। प्राचीन दृष्टिकोण के साथ ही पिछले पाँच दशकों के दौरान साइंस ऑफ़ विजडम पर अनुसंधान में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। विजडम को परिभाषित करने के अनेक प्रयत्न हुये हैं किन्तु अभी तक सर्वमान्य परिभाषा का निर्धारण नहीं हो पाया है। विजडम व्यक्तित्व की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषता मात्र नहीं है बल्कि यह एक न्यूरोबायोलॉजिकल विशेषता है जो समाजोन्मुखी व्यवहार, भावनात्मक-नियमन और आध्यात्मिकता जैसे विशिष्ट घटकों से मिलकर बनती है। इस बात को आगे और भी स्पष्ट करेंगे।

हाल ही में लोगों में विजडम के घटकों को बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन मेटा-एनालिसिस द्वारा किया गया। इस अध्ययन में ऐसे क्लिनिकल ट्रायल्स को समाविष्ट किया गया जो विजडम बढ़ाने के लिये अभी तक क्रियान्वित किये गये थे। इसमें 7096 व्यक्तियों से जुड़े 57 अध्ययनों के आंकड़े समाहित किये गये थे। विजडम के सभी घटकों से संबंधित आंकड़े तो नहीं मिल पाये किन्तु समाजोन्मुखी-व्यवहार (प्रोसोशल बेहवियर) से संबंधित 29, भावनात्मक विनियमन (इमोशनल रेगुलेशन) से संबंधित 13 और आध्यात्मिकता (स्पिरिचुअलिटी) से संबंधित 15 अध्ययन शामिल किये गये थे। मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि आध्यात्मिकता, भावनात्मक-नियमन और समाजोन्मुखी व्यवहार को बढ़ाने के लिये किये गये हस्तक्षेप व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं (देखें, ई.ई. ली इत्यादि, जामा साइकेइट्री, 77(9):925-935, 2020)।

शोधकर्ताओं को मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित करने हेतु विजडम बढ़ाने के उपायों पर ऐसे अध्ययन नहीं मिले जो विजडम के सभी घटकों की समग्रता को एकीकृत रूप से समाहित करते हुये किये गये हों। इस मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित समीक्षा के अनुसार विजडम को मापने के लिये कई दृष्टिकोण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये विजडम को दो रूपों में देखा जा सकता है-पहला उपयोगी अंतर सैद्धांतिक बुद्धिमत्ता (थ्योरेटिकल विजडम या जीवन के यथार्थ की समझ; प्रकृति और मानव के रिश्तों की समझ आदि) और दूसरी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (प्रैक्टिकल विजडम / फ्रोनेसिस, सही कारणों के लिये, सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता) सम्मिलित है। इन दोनों प्रकारों में सम्मिलित घटकों को मापने की विधियां और क्षमता वैज्ञानिक विकसित कर चुके हैं। परन्तु सैद्धांतिक ज्ञान (गहन समझ) की तुलना में व्यावहारिक ज्ञान (व्यावहारिक समझ) को प्रश्नावली के माध्यम से अधिक सुगमता से मापा जा सकता है। इस मेटा-एनालिसिस में व्यावहारिक समझ के सम्बन्ध में समाजोन्मुखी व्यवहार और भावनात्मक विनियमन को लिया गया और सैद्धांतिक समझ के संबंध में आध्यात्मिकता को शामिल किया गया। बुद्धिमत्ता के अन्य घटकों से जुड़े इंटरवेंशन वाले अध्ययनों की कमी के कारण निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चितता से निपटने की क्षमता, और सहिष्णुता जैसे घटक अध्ययन में शामिल नहीं किये जा सके। फिर भी जिन तीन घटकों को शामिल कर यह अध्ययन किया गया वह नया रास्ता दिखाने वाला है क्योंकि अध्ययन में सम्मिलित तीनों घटक अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। विजडम जैसे विषय यदि एम्पिरिकल रिसर्च की सीमाओं से परे ना भी हों तो भी काफी चुनौतीपूर्ण हैं।

प्रज्ञा के संबंध में यह बताना भी उपयोगी है कि आध्यामिकता इसका एक महत्वपूर्ण घटक है (देखें, डी.वी. जेस्ते इत्यादि, जर्नल ऑफ़ साइकियाट्रिक रिसर्च, 132:174-181, 2021)। आध्यामिकता और धार्मिकता में अंतर समझना जरूरी है। आध्यात्म हमें प्रकृति के समीप ले जाता है। आध्यामिकता व्यक्ति को व्यक्ति के समीप ले जाती है। आध्यामिकता प्राकृतिक तंत्रों के समीप भी ले जाती है।

आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति के लक्षण और व्यापक सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुतः जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

आध्यात्म वस्तुत: आत्मावलोकन और आत्म-समीक्षा के अवसर प्रदान करता है। आत्म-समीक्षा में यह भी शामिल है कि प्रकृति के साथ हमारे क्या संबंध हैं और हमें प्रकृति को बेहतर करने में हमारा क्या योगदान है। धार्मिकता एक अलग विषय है। धर्म की त्रुटिपूर्ण किन्तु बड़ी लोकप्रिय व्याख्या लोगों के बीच में मिलती है। ध्यान दीजिये, आध्यामिकता में किसी एक धर्म के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण नहीं है।

आध्यात्मिकता जहां एक और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के जैसा मानने का विचार देती है वहीं दूसरी ओर धर्म की समकालीन स्थिति यह है कि सारा विश्व अलग-अलग जाति धर्म और संप्रदाय में बंट गया है। आत्मवत् सर्वभूतेषु का सिद्धांत आध्यात्म की मूल आत्मा है। दरअसल एक रिलीजियस व्यक्ति आध्यात्मिक भी हो सकता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्ति धर्म के लोकप्रिय स्वरुप के अनुसार धार्मिक भी हो ऐसा आवश्यक नहीं है। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि भारतीय दर्शन में धर्म शब्द का मूल अर्थ उस शब्द से नहीं है जिसे दुनिया रिलीजन कहती है। असल में धर्म का मूल अर्थ व्यक्ति के नियत कर्तव्यों और उनके पालन से है।

प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक साहित्य में भी समझ के वैज्ञानिक स्वरूप देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा गीता का अध्ययन कर उसमें विजडम, प्रज्ञा, ज्ञान आदि पर 10 घटक खोजे गये हैं। इनमें से जीवन का ज्ञान, भावनात्मक विनियमन (इमोशनल रेगुलेशन) या आत्म-नियंत्रण, इच्छाओं पर नियंत्रण, मध्यम-मार्ग (मॉडरेशन या टेम्पेरेंस) निर्णायकता, आत्मा और उसके विषय में ज्ञान, ईश्वर पर विश्वास, कर्म-योग, आत्म-संतोष, प्राणियों के प्रति दया, दान, योग इत्यादि ऐसे विषय हैं जो केवल दर्शन या धर्म के विषय नहीं हैं बल्कि क्लिनिकल ट्रायल्स में भी उपयोगी पाये गये हैं। वर्तमान और अद्यतन शोध की स्थिति यह है कि विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। इनमें (1) सहिष्णुता एवं वैचारिक विविधता को स्वीकार करना, (2) अनिश्चितता के रहते हुये भी निर्णय लेने की क्षमता, (3) भावनात्मक विनियमन या इमोशनल रेगुलेशन, (4) समाजोन्मुखी व्यवहार या प्रोसोशल बिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता और करुणा आदि शामिल हैं, (5) आत्म-समीक्षा, (6) उचित सलाह देने में तत्परता या सोशल एडवाइजिंग तथा (7) आध्यात्मिकता शामिल हैं। जिस व्यक्ति में यह सभी सातों क्षमतायें (प्रज्ञा के घटक) पाये जाते हैं वह उन परिस्थितियों से बड़ी आसानी से बाहर निकल जाता है जिनमें प्रज्ञा में कमी वाले व्यक्ति उलझ जाते हैं।

वस्तुत: प्रज्ञा का मूल उद्देश्य स्वयं की और समाज की जिंदगी में बेहतरी लाना है। यहां एक प्रश्न उठता है कि यह विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा तो दुधारी तलवार हो सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जिसमें तिकड़मी बुद्धिमत्ता या एविल-विजडम हो। दरअसल ऐसा नहीं होता। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रज्ञा व्यक्ति को सदैव आत्म-नियंत्रित, आत्म-समीक्षक, और समाजोपयोगी ही बनाती है। प्रज्ञावान व्यक्ति अपने जीवन को सदैव बेहतर बनाता है और एक ऐसी आयु प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में सुखायु कहा जाता है। सुखायु के साथ-साथ प्रज्ञावान व्यक्ति एक ऐसी आयु भी प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में हितायु कहा जाता है। सुखायु और हितायु प्रज्ञावान व्यक्ति के लिये ही संभव है। शातिर दिमाग, तिकड़मी या चलता-पुर्जा व्यक्ति प्रज्ञावान नहीं होता।

तिकड़म के लिये उसके पास जानकारी बहुत हो सकती है परंतु प्रज्ञाविहीन कोरी जानकारी सुखायु और हितायु नहीं प्रदान कर सकती।

अब हम ज्ञान और समझ से आगे चलकर युक्ति की बात करते हैं जो ज्ञान और समझ से भी आगे समस्याओं के हल का रास्ता है। यह लोगों को लीक से हटकर सोचने और समस्याओं के समाधान हेतु विविध विकल्प देते हुए श्रेष्ठ विकल्प चुनने में मदद करती है। युक्ति एक सार्वभौमिक प्रबंधकीय सिद्धांत है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक, जो युक्ति-व्यपाश्रय सिद्धांत के जनक माने जाते हैं, के अनुसार अनेक कारणों की समठाता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वर्तमान, भूत और भविष्य, तीनों कालों को जाना जा सकता है।

युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25): बुद्धि: पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्ग: साध्यते यया।। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति के लक्षण और व्यापक सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुत: जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है। एक उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिक महत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है।

दैनिक जीवन में समस्या-समाधान हेतु ज्ञान, समझ और युक्ति एक साथ और उत्तरोत्तर श्रेणीबद्ध रूप दोनों प्रकार से उपयोगी हैं। ज्ञान जानकारी और तथ्य प्रदान करता है जो हमें समस्या को समझने और संभावित समाधानों पर मंथन करने में मदद कर सकता है। समझ हमें पिछले अनुभव और स्थिति के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने में मदद करती है। युक्ति हमें आगा-पीछा देखकर एक जटिल समस्या को छोटे, आसानी से प्रबंधन-योग्य चरणों में तोड़ने में मदद करती है, जिसे समस्या को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए लागू किया जा सकता है। इन तीन बहुआयामी संसाधनों के बिना जीवन में हर क्षण आने वाली जटिल समस्याओं का प्रभावी समाधान निकालना लगभग असंभव हो जाता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

पेपरलैस और वर्चुअल बनने जा रही है भारतीय न्याय व्यवस्था : किरेन रिजिजू

उदयपुर, (कासं)। केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि अब नए तकनीकी दौर में वर्चुअल कोर्ट का जमाना आ गया है। हमें हाईकोर्ट में सुनवाई के लिए एक शहर से दूसरे शहर तक महंगा इंधन खर्च करके जाने की जरूरत नहीं है। ईकोर्ट फेस थ्री में यह सब कुछ संभव हो जाएगा। केंद्रीय कानून मंत्री शनिवार को भारत सरकार के विधि आयोग और सुखाड़िया विश्वविद्यालय के विधि महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के विवेकानंद सभागार में भारत में सतत विकास क्रमागत उन्नति और कानूनी परिप्रेक्ष्य विषयक आयोजित कानूनविदों के दो दिवसीय सम्मेलन के पहले दिन उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

उदयपुर में केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के विवेकानंद सभागार में आयोजित कानूनविदों के दो दिवसीय सम्मेलन के पहले दिन उद्घाटन सत्र को संबोधित किया।

- **विधि आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति ऋतुराज अवस्थी ने कहा कि विकासशील देशों में सतत विकास पर्यावरण संरक्षण से ही संभव है**
- **"भारत में सतत विकास क्रमागत उन्नति और कानूनी परिप्रेक्ष्य" विषय पर कानूनविदों के दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित**

उन्होंने कहा कि हम भारतीय न्याय व्यवस्था को पेपरलेस और वर्चुअल बनाने जा रहे हैं। रिजिजू ने कहा कि ईकोर्ट फेस 2 के तहत कोविड-19 लॉकडाउन में भी वर्चुअल मोड पर न्यायालय चल रहे थे। पूरी दुनिया में यह आश्चर्य का विषय था अब हम ईकोर्ट फेस थ्री में आगे बढ़ रहे हैं, जिसके तहत न्यायिक प्रक्रिया को और चुस्त-दुरुस्त बनाएंगे।

उन्होंने कहा कि पिछले 8 सालों में सरकार ने 1486 ऐसे कानून हटा दिए जिनकी कोई प्रासंगिकता नहीं थी और 67 ऐसे कानूनों को हटाने की प्रक्रिया जारी है जो किसी भी परिप्रेक्ष्य में काम के नहीं है। इसके लिए संसद में बिल लेकर आ गए हैं। जो कानून काम का नहीं होगा उसको हटाने का अभियान तेज किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि उदयपुर न्यायालय की कई समस्याएं मेरे सामने आई है। यहां का भवन भी छोटा है और यहां पर बुनियादी समस्याएं भी है। स्मार्ट रूम, शौचालय और अन्य लोगों के बैठने की समुचित व्यवस्था की समस्याओं के बारे में मेरा ध्यानाकर्षण किया गया है। यदि मेरे पास प्रस्ताव भेजा जाएगा तो मैं निश्चित तौर पर उदयपुर न्यायालय के लिए जरूर कुछ करूंगा।

केंद्रीय कानून राज्यमंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल ने कहा कि भारत सरकार ने 10 करोड़ शौचालय बनाकर स्वस्थ भारत अभियान के तहत इज्जत घर बनवाए हैं। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। साथ ही सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाकर एक नजीर पेश की है।

राजस्थान उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव ने कहा कि पूरी दुनिया में हर क्षेत्र में प्रदूषण बढा है लेकिन विकास की रफ्तार को तेज भी करना है और प्रदूषण को भी रोकना है। इसके लिए हमें चिंता नहीं चिंतन करना होगा। सामाजिक और आर्थिक विकास को बढाते हुए पर्यावरण को भी सुरक्षित रखना होगा, यह सुनिश्चित करना जरूरी है। उद्घाटन सत्र में विधि आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति ऋतुराज अवस्थी ने कहा कि विकासशील देशों में सतत विकास पर्यावरण संरक्षण से ही संभव है।

बाबा श्याम के दरबार आने वाले भक्तों की जगह-जगह हो रही मान-मनुहार

खाटूश्यामजी, (निसं)। भक्ति, आस्था और सेवा का त्रिवेणी संगम इस समय रींगस से खाटूश्यामजी के मध्य पग-पग पर देखने को मिल रहा है। बाबा श्याम के दर्शन को आने वाले श्याम भक्त हाथों में रंग बिरंगे निशान लेकर आ रहे हैं जो बाबा श्याम की भक्ति में झूमते हुए नजर आते हैं। वहीं सम्पूर्ण राह में पग-पग पर लगे पांडालों में आस्था के साथ भजन कीर्तन सुनाई दे रहे हैं।

इसके साथ ही इन पांडालों में इन भक्तों की सेवा करने के लिए एक्यूप्रेशर मशीन, अत्याधुनिक सुविधाओं युक्त उपकरण, मालिश, प्राथमिक उपचार करते स्वयंसेवी संस्थाओं के स्वयंसेवक लगे हुए हैं। यह वह श्याम भक्त जो सम्पूर्ण वर्ष अपने कारोबार में व्यस्त रहते हैं लेकिन बाबा श्याम का फाल्गुन मेला आते ही खाटू नगरी में दौड़ कर आ जाते हैं और श्याम भक्तों की सेवा करने का पुण्य कमाते हैं। साथ ही इन पांडालों में तरह-तरह के भारतीय व्यंजन से भक्तों की मनुहार हो रही है।

श्याम बाबा के दर्शन के लिये भक्त नाचते-गाते खाटू पहुंच रहे हैं।

- **श्याम कुंड को बंद करने से भक्तों की आस्था पर आघात**

श्याम कुंड को किया बंद, भक्तों की आस्था पर आघात : बाबा श्याम के लक्खी मेले के चौथे दिन जिला प्रशासन ने श्याम कुंड को बंद कर दिया। जिससे लाखों श्याम भक्तों की आस्था को आघात लगा। वहीं स्थानीय व्यापारियों में भी प्रशासन के इस फैसले से रोष व्याप्त है। श्याम भक्त श्याम कुंड में स्नान करने व श्याम कुंड के दर्शन करने के लिए आते हैं। गौरतलब है कि श्याम कुंड बाबा श्याम का प्राकट्यय स्थल है और ऐसे में प्रशासन द्वारा अचानक मेले के दौरान श्याम कुंड को बंद कर दिया है। वहीं श्याम कुंड के रास्ते पर लगी दुकानों की आजिविका भी श्याम कुंड में आने वाले श्रद्धालुओं से चल रही थी। ऐसे में श्याम कुंड को बंद करने से व्यापारियों को भी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

पार्किंग का उत्तम व्यवस्था: बाबा श्याम के वार्षिक लक्खी मेलें में इस बार पार्किंग की उत्तम व्यवस्था की गई है। जिससे आने वाले श्याम भक्तों को अपने वाहन खड़े करने में तथा पुन गतंव्य में जाने में आसानी हो रही है। पार्किंग व्यवस्था में कमल कुमार के नेतृत्व में सुंदर व्यवस्था के चलते कतारबद्ध गाडियां खड़ी करने की सुगम व्यवस्था की गई है। बाबा श्याम के वार्षिक लक्खी मेलें में अब सर्कस, झूले इत्यादि सजकर तैयार हो गए हैं।आने वाले श्याम भक्तों की सुविधा के लिए मनोरंजन का साधन बने यह झूले बच्चों को भी लूभा रहे हैं तथा इन झूलों से मेले की ग्रामीण अंचल की खुशबू भी आती है।

घुड़सवार दल तारागढ़ पहाड़ी पर पहुंचा

अजमेर, (कासं)। घुड़सवारी को बढ़ावा देने, रीट एवं कानून व्यवस्था देखने और खेलों के प्रमोशन के लिए शनिवार को पुलिस एवं पशुपालन विभाग के घुड़सवार दल ने दुर्गम तारागढ़ पहाड़ी पर चढ़ाई की। दल का नेतृत्व पुलिस महानिरीक्षक रूपिंदर सिंह ने किया।

अजमेर के लिए यह एक पहला अवसर रहा जब सरकार के विभागों की रोमाचंक जुगलबंदी सुबह 5 बजे से 10.30 बजे तक जय हिन्द के जोश भरे उद्बोधन से महौल देश भक्ति पूर्ण रहा। पुलिस विभाग के आई.जी. रूपिंदर सिंघ, पशुपालन विभाग अजमेर रेंज के अतिरिक्त निदेशक डॉ. नवीन परिहार, एडीशनल एसपी राजेश चौधरी सहित घुडसवार तारागढ़ पहाडी के विकट एवं विहगंम रास्तो को पार करते हुए ऊंचाई पर पंहुचे। आईजी रूपिन्दर सिंह द्वारा अलसुबह घोडो से दल सहित सड़कों पर निकलने से रीट की परीक्षा के दौरान कानून व्यवस्था को और मजबूती मिली।

अतिरिक्त निदेशक रेंज अजमेर डॉ. नवीन परिहार ने रोमाचंक घुड़सवारी के दौरान घोड़ी के बेहतर रखरखाव, एक्विस्ट्रीयन स्पोर्ट्स में निरन्तर भाग लेने के लिए घोडों का एथलेटिक स्टेमिना बढ़ाने की बारीकियां बताई। इस दौरान आईजी रूपिंदर सिंह ने कानून व्यवस्था को बेहतर बनाने में विकट रास्ते जहां वाहन नहीं पहुंच पाते वहां घुड़सवारी दश्ते द्वारा घोड़ों की उपयोगिता की जानकारी दी।

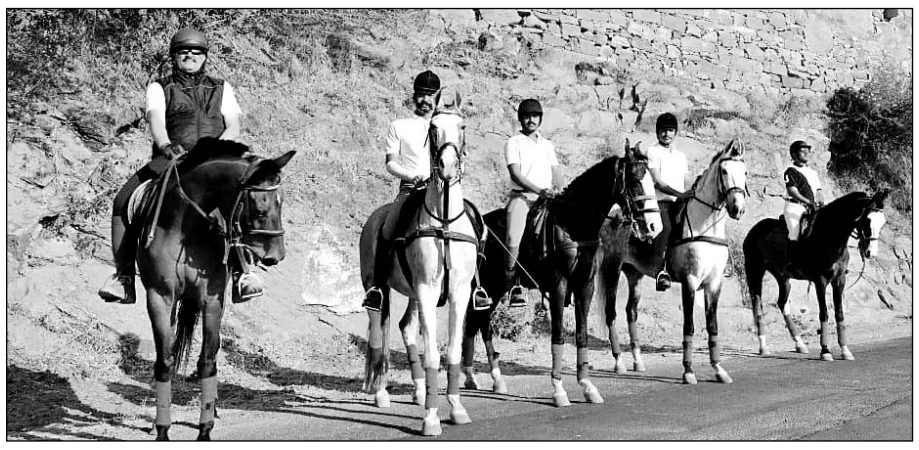

पुलिस एवं पशुपालन विभाग के घुड़सवार दल ने दुर्गम तारागढ़ पहाड़ी पर चढ़ाई की। दल का नेतृत्व पुलिस महानिरीक्षक रूपिंदर सिंह ने किया।

राशिफल रविवार 26 फरवरी, 2023

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, कृत्तिका नक्षत्र सोमवार प्रात: 5:19 तक, ऐन्द्रयन योग सांय 4:26 तक, गर करण दिन 12:40 तक, चन्द्रमा दिन 10:14 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-मकर, गुरू-मीन, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज त्रिपुष्कर योग रात्रि 12:59 तक है। ज्वालामुखी योग रात्रि 12:59 से सोमवार प्रात: 5:19 तक है। भद्रा रात्रि 12:59 से सोमवार दिन 1:40 तक रहेगी। आज भानु सप्तमी है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:23 से 9: 44 तक, लाभ-अमृत 9:44 से 12:40 तक, शुभ 2:05 से 3:31 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:58, सूर्यास्त 6:21

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

सिंह
नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। आज अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

धनु
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कन्या
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धन हानि हो सकती है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कुंभ
अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आज नये-पुराने मित्रों साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटका हुआ धन प्राप्त होगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मीन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।